CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि.ल.म

हि.ल.म

समाज विकासमाला

# कुण्डा का किला

हि.ल.म

साहित्य मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला: १४४

# गोलकुण्डा का किला

दक्षिण भारत के एक ऐतिहासिक किले का परिचय

लेखक
विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

हि. ८६

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६१
मूल्य
४० [redacted] नये पैसे

मुद्रक
राष्ट्रभाषा प्रिन्टर्स
क्वीन्स रोड, दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. ८ ६

# समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

# पाठकों से

हमारे देश में बहुत-से किले हैं, जिन्हें देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। लाल किले का नाम तो शायद ही कोई ऐसा हो, जिसने न सुना हो।

इस पुस्तक में हमने अपने एक बहुत पुराने किले की जानकारी दी है। गोलकुण्डा हैदराबाद के पास है और उसका किला टूट-फूट जाने पर भी पुरानी शान का अंदाज कराता है। उसके दरवाजे में घुसते ही भीतर मालूम हो जाता था, उसकी यह विशेषता आज भी बनी हुई है।

इस पुस्तक को पढ़कर आपको जहां बहुत-सी नई बातें मालूम होंगी, वहां किले को देखने की इच्छा भी होगी।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. ८६

# गोलकुण्डा का किला

: १ :

गोलकुण्डा दक्षिण भारत के आन्ध्र प्रदेश में एक छोटा-सा नगर है। किसी समय में यह नगर दक्षिण का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर माना जाता था। यहां हीरे, मोती, माणिकों का व्यापार करनेवाले व्यापारी तथा चतुर कलाकार रहते थे। परन्तु समय के फेर से अब वह एक मामूली वीरान बस्ती के रूप में रह गया है।

नगर से मिला हुआ गोलकुण्डा का प्रसिद्ध किला है। हालांकि यह किला अब अच्छी दशा में नहीं है, परन्तु फिर भी इसके बचे हुए बड़े-बड़े भवन, इसके भवनों की सुन्दर चोटियां, इसके तालाब और मन्दिर, उसकी विशाल झीलें आज भी अपने भाग्य के उतार-चढ़ाव की कहानियां सुनाते हैं। इस किले को देखकर लगता है, आदमी कितनी बड़ी-बड़ी आशाओं को लेकर किसी चीज को बनवाता है। फिर ऐसा समय आता है कि दूसरा आदमी उस बनी-बनाई चीज को बिगाड़ देता है। इसके बाद एक समय ऐसा भी आता है कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



किसी तीसरे आदमी को उसकी रक्षा करनी पड़ती है। ये तीनों ही बातें इस किले के साथ जुड़ी हुई हैं।

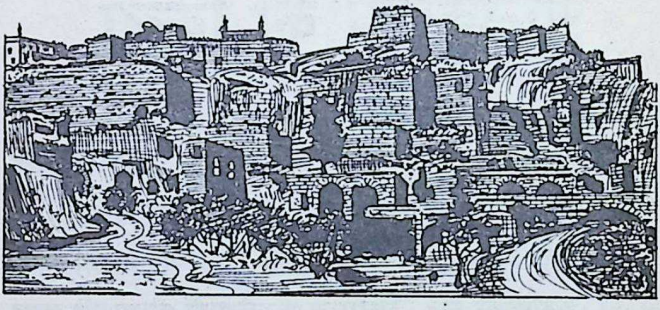

गोलकुण्डा का किला

कुतुबशाही के समय में सुलतान कुतुबशाह ने इस किले को बनवाया। उसने अपनी सुरक्षा, भोग-विलास आदि के लिए सब प्रकार की सामग्री जुटाई। पर औरंग-जेब ने उन सबको बेकार माना और अपने दक्षिण के हमले में इस किले को तोपों से बरबाद कराया। किला तहस-नहस हो गया और सदियों तक वैसा ही पड़ा रहा। लेकिन अब उसका भाग्य चेता है और सरकार उसके बचे हुए भवनों की सुरक्षा कर रही है।

गोलकुण्डा का किला समुद्रतल से दो हज़ार फुट ऊंची पहाड़ी पर बनाया गया है। यह जगह हैदराबाद नगर से पच्छिम की ओर कोई आठ मील की दूरी पर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



गोलकुण्डा नगर की बस्ती से गोलकुण्डा पहाड़ी की ऊंचाई लगभग २५० फुट है। किले के तीन तरफ खेती होती है। किसी समय किले के बाहरी भागों में सुन्दर बगीचे थे। ये बगीचे लड़ाई के समय में सेना के काम में आते थे। धीरे-धीरे वे बरबाद हो गये।

हैदराबाद से गोलकुण्डा तक आने-जाने के लिए मोटर-बसें आती-जाती हैं। पक्की सड़क है। यात्रियों को कोई कठिनाई नहीं होती। खाने-पीने की चीजें मिल जाती हैं। इस समय गोलकुण्डा की बस्ती के बहुत-से मकान टूटी-फूटी हालत में पड़े हैं।

: २ :

पन्द्रहवीं सदी में दक्षिण में कई छोटे-छोटे राज्य बन गये थे। ईरान देश के तुर्क कुतुब-उल-मुल्क ने दक्षिण भारत में अपने पैर जमाने का पूरा यत्न किया। उसकी मुठभेड़ जिलानी नाम के एक बहादुर डाकू से हो गई। उसने जिलानी को हराने में बड़ी वीरता दिखाई। जिलानी डाकू होते हुए भी एक प्रभावशाली, बहादुर और लड़ाका सैनिक था। जब कुतुब-उल-मुल्क ने जिलानी को हराकर अपने काबू में कर लिया तो उसे सन् १४९५ में वारंगल का छोटा-सा राज्य उपहार के रूप में मिला। इसके बाद सन् १५१२ में कुतुब-उल-मुल्क को गोल-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



कुण्डा भी मिल गया। गोलकुण्डा के मिल जाने पर कुतुब-उल-मुल्क, सुलतान कुलीशाह के नाम से मशहूर हो गया। उसने धीरे-धीरे अपनी शक्ति को बढ़ा लिया और दक्षिण में एक विशाल किला बनवाने का इरादा किया।

कुतुबशाह जिस समय किले के लिए जगह खोज रहा था, उसे एक गड़रिये ने गोलकुण्डा की पहाड़ी दिखाई। यह स्थान ऊंचाई पर था और साथ ही दूर तक फैला हुआ था। किले के लिए कुतुबशाह ने इस स्थान को पसन्द कर लिया। इसके बाद उसने इमारत बनवाना शुरू कर दिया।

: ३ :

दक्षिण में हसन कांगू नाम के एक अफगान सरदार ने सन् १३४७ में बहमनी राज्य की नींव डाली। इस वंश का राज्य कोई एक सौ अस्सी साल तक चलता रहा। इस वंश में कई प्रतापी राजा हुए। उन्होंने विजयनगर के राजाओं के साथ अनेक लड़ाइयां लड़ीं। बहमनी राज्य में अमीरों के दो दल थे। इनमें आपस में सदा लड़ाई-झगड़े रहते थे। इन लड़ाई-झगड़ों का फल यह हुआ कि बहमनी राज्य कमजोर हो गया। बहमनी राज्य के एक बादशाह के मन्त्री, ख्वाजा महमूद गवान ने बहमनी राज्य की हालत को सुधारने की बड़ी कोशिश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



की, लेकिन उसका कोई नतीजा नहीं निकला।

सन् १४८१ में मौहम्मद शाह ने महमूद गवान को मरवा डाला। उसके मारे जाने पर बहमनी राज्य के अमीरों ने विद्रोह खड़ा कर दिया। इसका फल यह हुआ कि थोड़े दिन बाद बहमनी राज्य पांच छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। अहमदनगर में निज़ामशाही, बीजापुर में आदिलशाही, गोलकुण्डा में कुतुबशाही, बीदर में बीदरशाही और बरार में इमादशाही कायम हो गई। ये सब दक्षिण के पांच छोटे-छोटे राज्य थे। गोलकुण्डा के कुतुबशाह ने गोलकुण्डा का किला बनवाया।

कुतुबशाह ने इस किले के बनवाने में लाखों रुपये खर्च किये। उसका विचार दक्षिण में एक मजबूत राज्य कायम करने का था। उसने इस किले की चहारदीवारी को बहुत ही मजबूत बनवाया। इसमें अस्सी बुर्जियां बनवाई, जिनपर अबतक कुतुबशाही के समय की तोपें लगी हुई हैं।

किले के भीतरी हिस्से में ऐसे कई भवन तैयार कराये गए, जो अपनी कला और कारीगरी के लिए आज भी प्रसिद्ध हैं। भवन-निर्माण-कला में हालांकि मुगल बादशाहों ने अधिक नाम पाया था, फिर भी उनसे पहले के मुसलमान बादशाहों के बनवाये भवनों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



भी भारतीय कला-कौशल की सुन्दर झलक दिखाई पड़ती है।

गोलकुण्डा के मुख्य द्वार में एक बड़ी विशेषता है। इस द्वार के बीचोंबीच खड़े होकर ताली बजाने या किसी तरह का शोर करने से उसकी गुम्बद गूंज उठती है। वही आवाज किले के बालाहिसार (रंगमहल) में उसी तरह सुनाई देती है। इस आवाज के बारे में बड़े-बड़े कुशल इंजीनियरों ने जांच की, लेकिन अभी तक पता नहीं चल सका कि ऐसा क्यों होता है। इसकी व्यवस्था तो इसलिए की गई होगी कि किसी समय यदि कोई दुश्मन किले में आवे तो अन्दर फौरन सूचना पहुंच जाय।

मुगल बादशाह अकबर ने सन् १५९६ में गोलकुण्डा के राज्य को अपने अधीन करने का प्रयत्न किया। उसने सुलतान के पास अपने दूत भेजे कि वह उसकी अधीनता स्वीकार कर ले, परन्तु उसने कोई उत्तर न दिया।

अकबर के शासन-काल में दक्षिण का विजयनगर राज्य कई हिस्सों में बंट चुका था। कृष्णदेव ने दक्षिण के राज्य को मजबूत रखने की बड़ी कोशिश की, लेकिन उसके मर जाने पर वहां घरेलू लड़ाई छिड़ गई, जिसका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki.Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



नतीजा यह हुआ कि एक बड़ा राज्य कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। कृष्णदेव के बाद राम राजा ने विजयनगर के राज्य को कायम रखने की कोशिश की, लेकिन उसपर मुसलमान राजाओं ने हमले किये और उसके राज को अपने राज्यों में मिला लिया।

दक्षिण के मुसलमान बादशाह भी अधिक दिन तक मिल-जुलकर राज्य करने में सफल न हुए। अहमदनगर का राज्य उस समय अधिक शक्तिशाली था, लेकिन यहां के सरदारों में भी झगड़े खड़े हो गये। नतीजा यह हुआ कि एक सरदार ने अकबर को लिखा कि वह दक्षिण पर फिर चढ़ाई करे। उसने अपनी सेना की सहायता देना भी स्वीकार किया।

अकबर तो ऐसे अवसर की तलाश में रहता था। उसने अपने लड़के मुराद को सेनापति बनाकर दक्षिण भेजा। लेकिन अहमदनगर के सरदारों को इस बात का पता चल गया कि हमारे एक साथी ने अकबर को यहां बुलाया है। वे बहुत परेशान हुए। उन्होंने फैसला करके चांदबीबी को अहमदनगर की राजगद्दी पर बिठाया।

चांदबीबी बहुत समझदार और बलवान स्त्री थी। उसमें राज्य चलाने का भी गुण था। उसने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



मुगल सेनाओं का डटकर मुकाबला किया। मुगल सेना अहमदनगर पर अपना अधिकार न कर सकी। लेकिन फिर भी उनकी तादाद इतनी ज्यादा थी कि चांदबीबी को उनसे समझौता करना पड़ा। समझौते में बरार का प्रान्त मुगलों को देना पड़ा और मुगल सेना वहां से वापस हो गई।

चांदबीबी ने लड़ाई में बड़ी बहादुरी दिखाई थी, फिर भी वह अपने राज्य को कायम न रख सकी। मुगल सेना अभी दो-चार पड़ाव दूर ही पहुंची थी कि चांदबीबी के खिलाफ राज्य में बगावत शुरू हो गई। अहमदनगर राज्य के सरदारों ने चांदबीबी को मार डाला। लेकिन फिर भी वे अपने राज्य को बचाने में सफल न हुए।

एक सरदार ने मुगल सेना को फिर निमन्त्रण दिया कि वह अहमदनगर के राज्य पर हमला करे। मुराद ने इस अवसर से लाभ उठाया। वह फिर हमला करने के लिए चल दिया। मुगल सेना ने इस तरह १६०१ में अहमदनगर पर अधिकार कर लिया।

इससे पहले अकबर भी दक्षिण पर हमला कर चुका था। उसने एक बड़ी सेना के साथ दक्षिण की ओर कूच किया था, लेकिन वह गोलकुण्डा तक नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



पहुंचा था और बीच से ही उसे लौट जाना पड़ा था।

कुछ समय के बाद अहमदनगर का राज्य फिर स्वतन्त्र हो गया। सन् १६३३ में मुगल बादशाह शाहजहां ने अहमदनगर पर हमला किया और उसे जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। इस लड़ाई में गोलकुण्डा के सुलतान ने अहमदनगर के बादशाह की सहायता की। इस कारण मुगल बादशाह शाहजहां ने उससे भी हर्जाना वसूल किया। इसके बाद १६३६ में गोलकुण्डा का सुलतान मुगल बादशाह के अधीन होगया।

दिल्ली के मुगल बादशाह और दक्षिण के सुलतान में सदा ही शत्रुता बनी रही। इस शत्रुता का कारण राज्य हड़प लेना या लड़ाई में हरा देना या जीत लेना नहीं था, बल्कि इसका मुख्य कारण इन दोनों शाही-परिवारों का धार्मिक मतभेद था। मुगल बादशाह सुन्नी मुसलमान थे और दक्षिण के सुलतान शिया थे। सुलतान फारस के शाह को शिया मुसलमानों का पेशवा समझते थे और उसके लिए धार्मिक श्रद्धा, विश्वास और भक्ति रखते थे। शाहजहां इस प्रकार के धार्मिक विश्वास का विरोधी था और वह इस बात को मुगल बादशाहों का अपमान समझता था। वह चाहता था कि दक्षिण के शिया मुसलमान उसके नीचे आ जायं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



बीजापुर का सुलतान बादशाह शाहजहां के अधीन हो जाने पर दिल्ली के बादशाह को सालाना कर देने लगा, परन्तु गोलकुण्डा के सुलतान ने ऐसा करना कबूल नहीं किया। इसपर मुगल बादशाह ने अपनी फौज की मदद से गोलकुण्डा राज्य को रौंद डाला। हारकर वह भी सालाना कर देने लगा और उसने हर्जाने का भी बहुत-सा रुपया दिया। शाहजहां ने दक्षिण का प्रबन्ध सादुल्ला खां को सौंपा। उसने अपनी चतुराई से दक्षिण की एक बड़ी दौलत को दिल्ली पहुंचाया।

शाहजहां को बड़ी-बड़ी इमारतें और किले बनवाने का शौक था। दिल्ली का लाल किला उसकी यादगार है। इसमें उसका एक कीमती राजसिंहासन भी था, जिसे 'तख्ते-ताऊस' कहते थे। इस तख्ते-ताऊस में कीमती हीरे जड़े हुए थे। कहा जाता है कि ये सब हीरे गोलकुण्डा से लाये गए थे। इस तख्ते-ताऊस पर उस समय छः करोड़ रुपये की लागत आई थी।

दक्षिण की विजय पर शाहजहां को अहमदनगर राज्य से बहुत-सा धन मिला। इसी तरह गोलकुण्डा से भी उसे कीमती चीजें मिलीं। कहा जाता है कि लाल किले के दीवाने खास में बहुत-से कीमती हीरे जड़े गए थे। ये हीरे भी गोलकुण्डा से ही लाये गए थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



शाहजहां अपने पुत्र औरंगजेब को दूर रखना चाहता था। उसने औरंगजेब को इसीलिए दक्षिण का सूबेदार बनाया। औरंगजेब ने गोलकुण्डा के नवाब के मन्त्री मीर जुमला को अपनी तरफ कर लिया। उससे औरंगजेब को गोलकुण्डा का सारा भेद मालूम हो गया। इसके बाद औरंगजेब ने गोलकुण्डा पर एक बड़ा हमला किया। उसको पूरा यकीन था कि वह गोलकुण्डा पर कब्जा कर लेगा, लेकिन उसी समय दिल्ली से शाहजहां बादशाह का फरमान आ गया कि वह लड़ाई बन्द करके दिल्ली वापस आ जाय। इस तरह से गोलकुण्डा का किला मुगलों के अधीन न हो पाया।

इधर दिल्ली में शाहजहां के लड़कों में राज्य के लिए झगड़े शुरू हो गये। शाहजहां में इतनी ताकत नहीं थी कि वह अपने पुत्र औरंगजेब को अपने वश में रख सके। औरंगजेब ने मौका पाकर दिल्ली का राज्य अपने कब्जे में करके शाहजहां को कैद कर लिया।

इन झगड़ों का परिणाम यह हुआ कि दक्षिण के सुलतान बादशाह फिर उभरे और उन्होंने अपनी ताकत को बढ़ाने की कोशिश की। दक्षिण के राज्यों में उस समय गोलकुण्डा एक मालदार राज्य समझा जाता था। उसपर मुगल बादशाहों की नजर लगी रहती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



: ४ :

गोलकुण्डा के सुलतान के मुगलों के अधीन हो जाने पर भी उसने अपनी ताकत बढ़ाने का बराबर प्रयत्न किया। जब औरंगजेब को इस बात का पता चला कि सुलतान फिर अपनी ताकत बढ़ाकर मुगलों का विरोध करना चाहता है तो उसने सन् १६८७ में गोलकुण्डा के किले पर हमला कर दिया। उसने किले के अन्दर बने भवनों को तुड़वाया और की कई समाधियों और बगीचों को भी नष्ट करा दिया। नतीजा यह हुआ कि किला एक तरह से ऊजड़-सा हो गया।

कुतुबशाही के अन्तिम सुलतान अब्दुल हसन और मुगल बादशाह औरंगजेब के बीच लगातार आठ महीने तक लड़ाई होती रही। सुलतान ने किले की रक्षा का सब तरह से प्रयत्न किया, परन्तु वह हार गया और अन्त में सन् १६८७ में औरंगजेब ने गोलकुण्डा के किले पर अधिकार कर लिया।

कुतुबशाही राजवंश के पतन का कारण यह था कि सुलतान विलासी था। इसके अलावा एक कारण यह भी था कि उसे दक्षिण के दूसरे सुलतानों ने सहायता नहीं दी, बल्कि उसके साथ विश्वासघात किया। उनमें से एक तो स्वार्थवश औरंगजेब से ही जा मिला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



औरंगजेब से हुई लड़ाई में सुलतान के मन्त्री अब्दुल रज्जाक लारी की वीरता का जिक्र करना ज़रूरी है। गोलकुण्डा के आखरी सुलतान अब्दुल हसन का मन्त्री अब्दुल रज्जाक लारी बड़ा योग्य, बहादुर और स्वामिभक्त था। जब औरंगजेब किले का आठ महीने तक घेरा डाले पड़ा रहा और विजयी न हुआ तो उसने लारी को अपनी तरफ मिलाने की कोशिश की। औरंगजेब ने लारी के पास एक परवाना भेजा, जिसमें छः हजारी मनसबदारी देने का लालच दिया

अब्दुल रज्जाक लारी ने जब यह परवाना पढ़ा तो वह आग बबूला हो गया। उसने परवाने को फाड़कर औरंगजेब के दूत के मुंह पर मारा और कहा, "जाओ, अपने मालिक से कह दो कि हम नमकहराम नहीं हैं। जबतक हमारे जिस्म में जान बाकी है तबतक हम मुगलों का मुकाबला करेंगे।"

औरंगजेब अब्दुल रज्जाक लारी के बहादुरी-भरे उत्तर को पाकर निराश तो हुआ, लेकिन उसने गोलकुण्डा किले को विजय कर लेने की चाह को नहीं छोड़ा। वह अपने सैनिकों की हिम्मत बराबर बढ़ाता रहा। उसने सुलतान के एक और सरदार अब्दुल्ला खां को अपनी ओर तोड़ लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



विश्वासघाती सरदार अब्दुल्ल खां ने एक दिन मौका पाकर किले का दरवाजा खोल दिया और मुगल सेना को खबर दे दी कि वह उसमें बेधड़क घुस जाय। शाहजादा मौहम्मद आलम के नेतृत्व में मुगल फौज किले में घुस गई। उसने सुलतान की फौज पर हमला कर दिया, जिसमें भगदड़ मच गई। सुलतान के सिपाही इधर-उधर जान बचाने के लिए भागने लगे।

जब सुलतान अब्दुल हसन ने यह सुना तो उसकी हिम्मत टूट गई। वह अपने हरम में पहुंचा और उसने अपनी बेगमों से आखिरी बिदाई ली। इसके बाद वह अपने राज-दरबार में एक मसनद पर जा बैठा और मुगलों के आने का इन्तजार करने लगा। दूसरी तरफ सुलतान का मन्त्री अब्दुल रज्जाक लारी इस दशा में भी मुगल फौज से युद्ध करता रहा। वह अपने कुछ चुने हुए साथियों को लेकर घोड़े पर सवार होकर मारकाट मचाता हुआ किले से बाहर निकल जाने के लिए चला। परन्तु किले से बाहर निकलने में उसे सफलता नहीं मिली। उसके लगभग सभी साथी मारे गये। वह स्वयं भी घायल हो गया। औरंगजेब के सैनिक उसे मूर्च्छित अवस्था में पकड़कर अपने स्वामी के पास ले गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



औरंगजेब ने लारी का इलाज कराया, क्योंकि वह उसकी बहादुरी, योग्यता और स्वामिभक्ति पर मोहित था। अच्छे हो जाने पर औरंगजेब ने उसे छः हजारी मनसबदारी देने की फिर चर्चा की, परन्तु उसने मना कर दिया। जब सुलतान को इस बात का पता चला

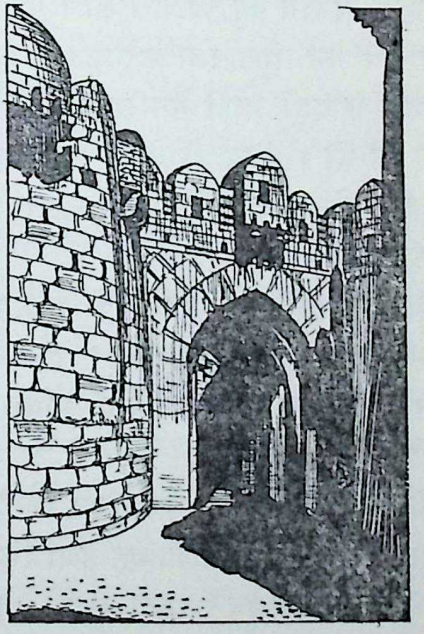

फतेह दरवाजा

तो उसने लारी को तैयार कर दिया।

जिस दरवाजे से मुगल सेना किले में घुसी थी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



उसका नाम फतह दरवाजा रक्खा गया, जो अबतक इसी नाम से पुकारा जाता है।

औरंगजेब की विजय से पहले दक्षिण में मरहठों ने अपनी ताकत बढ़ाने की पूरी कोशिश की। शिवाजी ने अपनी वीरता और संगठन के बल पर दक्षिण के किलों को भी बचाने की कोशिश की। परन्तु मुगलों की भारी सेना का मुकाबला करना कठिन था। उस समय मुगलों ने बड़ी भारी सेना दक्षिण की विजय के लिए लगा दी थी। शिवाजी महाराज ने उसका डट-कर मुकाबला किया। औरंगजेब की सेना को काफी नुकसान पहुंचा।

शिवाजी ने दक्षिण में नर्मदा से कृष्णा नदी तक के हिस्से को दक्षिण का एक मजबूत राज बनाने की कोशिश की, लेकिन उनको सबसे अधिक परेशानी मुगलों की सेना से मुकाबला करने में उठानी पड़ी। दूसरे, दक्षिण के सुलतान भी मुगलों का किसी-न-किसी तरह से साथ देते रहे। नतीजा यह हुआ कि शिवाजी दक्षिण में जिस मजबूत मरहठा राज्य को बनाना चाहते थे, वह न बन सका। उनके मरने के बाद उनका पुत्र सम्भाजी अपने राज्य की ठीक तरह से रक्षा न कर सका।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



मुगलों के बार-बार हमले होने से विजयनगर और गोलकुण्डा के राज काफी कमजोर हो गये। गोलकुण्डा की दौलत भी खूब लूटी गई। उसका किला बरबाद हुआ और उसका फौजी महत्व समाप्त हो गया।

: ५ :

किले की रक्षा के लिए किले में ऊंची-ऊंची बुर्जियां बनी हैं। इनपर कुतुबशाही समय की तोपें रक्खी हुई हैं। कई तोपों के पीछे के भाग नष्ट कर दिये गए हैं। कुछ तोपों में लोहे के छड़ें ठूंस दी गई हैं। किले पर अधिकार पा लेने के बाद औरंगजेब ने इन सब हथियारों को बेकार करा दिया था। किले की रक्षा के लिए उसके पश्चिमी भाग में ऊपर के हिस्से में एक बहुत बड़ी तोप भी लगाई गई थी।

किले में लकड़ी की बहुत-सी बन्दूकें इस समय भी पड़ी हुई हैं। कई कमरे इनसे भरे हुए हैं। कहा जाता है, इनमें बारूद जैसी किसी वस्तु का प्रयोग किया जाता था। परन्तु आज ये सब लकड़ी का ढेर मात्र हैं। जिन बन्दूकों से भारत के सैनिक दुश्मन को हराते थे वे आज बच्चों के खिलौने जैसी लगती हैं।

किले के ऊपरी हिस्से में एक जगह हमें एक गोलाकार छेद दिखाया गया। इसमें झांकने पर हमें एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



छोटी-सी कोठरी दिखाई दी। कहा जाता है कि इसमें स्वामी रामदास को कैद करके रखा गया था। इस गोल छेद के द्वारा उन्हें दिन में केवल एक बार रूखा-सूखा भोजन और पानी दिया जाता था। गोलकुण्डा किले की अंधेरी चट्टानों के भीतर सूर्य की कुछ ही किरणें पहुंच पाती थीं, परन्तु स्वामी रामदास इस अंधेरी कोठरी में लम्बे अर्से तक बन्द रहे और घोर यातनाएं सहन करते रहे।

सन् १६०३ में कुतुबशाही के समय में गोलकुण्डा राज्य के प्रधान मन्त्री मददन्ना बने। उनके भाई अबकन्ना सेनापति बनाये गए। उनका भानजा गोपन्ना गोदावरी के पूर्वी देश भद्राचलम् पर राज्य के माल-विभाग का अफसर नियत हुआ। इसी गोपन्ना का नाम स्वामी रामदास था। यह वैष्णव ब्राह्मण थे। इनके हृदय में राम की अपार भक्ति थी। कहा जाता है, इन्होंने बिना आज्ञा लिये राजा के खजाने से छः लाख रुपये अपने प्रिय देव की मूर्तियां, मन्दिर और मठ बनवाने में खर्च कर दिये। इसपर सुलतान बहुत बिगड़ा। सुलतान के बिगड़ने का एक और भी कारण था। उसे बताया गया कि स्वामी रामदास एक ऐसी शक्ति की पूजा कर रहे हैं, जिससे सुलतानों का राज्य नष्ट हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



सकता है। सुलतान ने नाराज होकर स्वामी रामदास को गोलकुण्डा की अंधेरी कोठरी में बन्द करा दिया, और आखिरी दम तक उसीमें रहने का हुक्म दिया।

इनके छुटकारे के बारे में कई कहानियां कही जाती हैं। कुछका विश्वास है कि राम ने अपने भक्त की पुकार सुनी और वह स्वयं किले की उस अंधेरी कोठरी में पहुंचे, जहां स्वामी रामदास बन्द ने और उनको वहां से निकालकर ले गये। कुछका कहना है कि भगवान राम ने एक मामूली आदमी का रूप धारण करके सुलतान का सारा रुपया चुकता कर दिया और सुलतान ने उन्हें छोड़ दिया। कुछका यह भी कहना है कि स्वामी रामदास छत के गोलाकार छेद से एक विश्वासपात्र कर्मचारी की सहायता से बाहर आये और फिर वहां से निकलकर जंगलों में छिप गये।

गोलकुण्डा नगर के उत्तर-पश्चिम की ओर एक मील दूरी पर एक बारादरी है। यहांपर सुलतान इब्राहीम कुतुबशाह की दो हिन्दू पत्नियां, भागमती और तारामती के दो सुन्दर मकबरे बने हुए हैं। इनके निर्माण पर बहुत धन खर्च किया गया। कहा जाता है कि औरंगजेब के हमले के समय इन दोनों मकबरों को काफी नुकसान पहुंचाया गया। यह भी बताया जाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



है कि सुलतान ने भागमती के नाम पर भागनगर नाम का एक नगर बसाया था, जो बाद में हैदराबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गोलकुण्डा का अन्तिम सुलतान अब्दुलहसन बड़ा ही मस्त, मनचला और विषयी बादशाह था। वह तानाशाह के नाम से पुकारा जाता था। वह नाच-गान का बड़ा प्रेमी था। उसने बारादरी से राज-दरबार तक तार बंधवाये थे। इन तारों के द्वारा बारादरी से संगीत और नृत्य की मीठी आवाज राजदरबार में गूंजती थी।

इस किले के बारे में यह भी कहा जाता है कि यहां हीरों की खान थी। किले के राजभवनों में से एक भवन हीरे-मोतियों का भवन कहलाता था। उस भवन में अनेक प्रकार के हीरे, मोती और मूल्यवान् पत्थर सुरक्षित रहते थे। अगर पिछले इतिहास को देखा जाय तो मालूम होता है कि कुतुबशाही अपनी भारी दौलत और कीमती हीरे-जवाहरात के लिए सारे हिन्दुस्तान में मशहूर था। हालांकि इस समय किले के किसी हिस्से में हीरे, मोतियों का कोई निशान बाकी नहीं, फिर भी यह किला हीरे, मोतियों की खानों के लिए अबतक मशहूर है। सुलतानों के समय में इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



किले में हीरों की कटाई-छंटाई का काम होता था और उनपर पालिश भी की जाती थी। इस काम को करने-वाले कारीगरों के पास बाहर से भी कटाई और पालिश के लिए हीरे और मोती आते थे।

गोलकुण्डा की खान से जगत्-प्रसिद्ध कोहनूर हीरा मिला था। गोलकुण्डा के सुलतान ने सबसे पहले इस हीरे को मुगल बादशाह शाहजहां को भेंट में दिया था। शाहजहां ने इसे अपने तख्ते-ताऊस में जड़वाया था। नादिरशाह के हमले तक यह हीरा मुगल बाद-शाह के पास रहा।

सन् १७३९ में नादिरशाह ने दिल्ली पर हमला किया। नादिरशाह ने दिल्ली को खुलकर लूट कराई। दिल्ली की सड़कें और गलियां लोगों के खून से भर गईं। उसी अवसर पर नादिरशाह ने दिल्ली के लाल किले को भी अपने कब्जे में कर लिया। उन दिनों लाल किले में बड़ी दौलत जमा थी। शाहजहां का कीमती तख्ते-ताऊस भी वहां मौजूद था। नादिरशाह ने किले के हर हिस्से को लूटा। उसने तख्ते-ताऊस के हीरे-जवाहरात भी लूटे। उस लूट में नादिरशाह को कोहनूर हीरा मिला।

हिन्दुस्तान की लूटमार के बाद नादिरशाह अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



मुल्क को वापस लौट गया। नादिरशाह के पास से कोहनूर हीरा अफगानिस्तान के शाह के पास पहुंचा। इस तरह से अब यह हीरा अपने भारत की निधि न रहकर विदेशी बन गया।

भारत के उत्तरी भाग पंजाब में महाराज रणजीत-सिंह ने अपनी ताकत बहुत बढ़ा ली। उनके नाम की धाक सारे देश में फैल गई। उन्होंने अपनी सेनाओं को लेकर सिंधु नदी को पारकर अफगानिस्तान पर हमला किया। पंजाब के सिक्खों और अफगानिस्तान के पठानों की नौशेरा में बड़ी भारी लड़ाई हुई। इस लड़ाई में बहुत-से पठान मारे गये और महाराजा रणजीतसिंह जीत गये।

अफगानिस्तान के अमीर दोस्त मोहम्मद शाह ने हारने के बाद महाराजा रणजीतसिंह को बहुत-सी चीजें भेंट में दीं, जिनमें यह कोहनूर हीरा भी शामिल था। इस तरह से यह हीरा अफगानिस्तान से लौटकर फिर अपने देश में आ गया।

महाराजा रणजीतसिंह ने अफगानिस्तान की लड़ाई जीतने के बाद पंजाब के राज को और बढ़ाया। उत्तर में उनका राज लाहौर से कश्मीर तक फैला। पश्चिम में उन्होंने पेशावर तक कब्जा कर लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



दक्षिण में मुलतान तक और पूर्व में सतलुज नदी तक उनका राज फैल गया।

उन दिनों अंग्रेज भी अपनी ताकत बढ़ाने में लगे थे। उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह के साथ कई लड़ाइयां लड़ीं। अंग्रेज लड़ाई में सफल हुए और नतीजा यह हुआ कि महाराजा रणजीतसिंह को उनसे सुलह करनी पड़ी। अंग्रेजों के साथ सुलह करने पर महाराजा ने कोहनूर हीरा अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया।

महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने पंजाब में अपनी ताकत को और बढ़ाया। उन्होंने महाराज दलीपसिंह की छोटी उम्र का लाभ उठाया। लार्ड हार्डिग ने शुरू में राजमाता को लाहौर की गद्दी पर बिठाया और कहा कि जबतक तुम्हारा लड़का बड़ा हो तबतक राज-काज चलाओ। लेकिन कुछ दिनों के बाद उन्होंने राजमाता को नजरबन्द कर लिया। इसके बाद अंग्रेजों ने पंजाब के और भी हिस्से ले लिये।

महाराजा रणजीतसिंह ने जो कोहनूर हीरा अंग्रेजों के सुपुर्द किया था, वे उसे अपने देश इंग्लैंड ले गये। उस समय से अबतक वह हीरा उनके पास ही है। अब भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर यह मांग की जा रही है कि ब्रिटिश सरकार उस हीरे को भारत सरकार को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



लौटा दे।

: ६ :

बनजारी दरवाजे के नीचे की तरफ कुतुबशाही सुलतानों के बहुत-से मकबरे हैं। ये मकबरे बड़े ही कलापूर्ण ढंग से तैयार कराये गये हैं। गोलकुण्डा के आखिरी तानाशाह सुलतान को छोड़कर प्रायः सभी

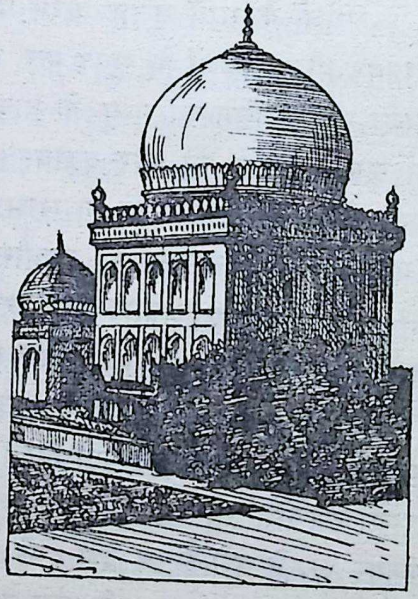

कुलीशाह का मकबरा

सुलतानों के मकबरे यहां बने हुए हैं। इनमें एक मकबरा तानाशाह की लड़की का भी है, जिसपर काफी धन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



खर्च किया गया है। इन मकबरों में सबसे पुराना मकबरा सन् १५४३ से पहले का है। इसके बारे में कहा जाता है कि सुलतान कुलीशाह ने अपनी मृत्यु के पहले ही इसको बनवा दिया था। अपने जीवनकाल में कब्र का इन्तजाम कर देने की चाह और भी कुछ मुसलमान बादशाहों के दिल में रही और उन्होंने उसे पूरा भी किया।

इन सुन्दर मकबरों के निर्माण में संगमरमर का प्रयोग किया गया है। संगमरमर पर शिल्पकला का बड़ा सुन्दर काम किया गया है।

किले में एक स्थान पर फांसीघर बना हुआ है। यह एक अंधेरी-सी कोठरी है। इस कोठरी में एक जगह लकड़ी की एक बल्ली लगी हुई है। इस कोठरी में इस लकड़ी के सहारे अपराधियों को फांसी दी जाती थी। अपराधी का सिर इस लकड़ी के बीच फंसा दिया जाता था। फिर उसके शरीर के शेष भाग को धकेलकर कोठरी के बीच में छोड़ दिया जाता था। इस तरह से अपराधी तड़प-तड़पकर अपने प्राण छोड़ देता था। जाने इस तरह से कितने व्यक्तियों ने अपने जीवन को भेंट चढ़ाया होगा।

किले में कई झील और तालाब भी हैं। इनमें से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



एक झील काफी लम्बी-चौड़ी है। सुलतान ने इस झील को बनवाया था। पहले यह एक साधारण जलाशय-सा था। किसी समय सुलतान इस झील के किनारे अपना मन बहलाने के लिए आता था और यहां नाच और गाने का कार्यक्रम चला करता था।

इस किले के तालाबों का भी अब कोई इस्तेमाल नहीं। उनके पास कीचड़ और दलदल रहता है। कटीली झाड़ियां और बनस्पतियां उगी रहती हैं। जब इस किले में हजारों आदमी रहते थे तो यहां के तालाब, झील सभी काम में आते थे, लेकिन वे ही चीजें आदमियों के न रहने से बेकार पड़ी हैं।

किले की सबसे ऊंची चोटी पर सुलतान कुतुब-शाह ने अपने लिए एक बड़ा महल बनवाया था। किसी समय यह महल दक्षिण का एक सुन्दर महल था। सुलतान ने इसे अपने आनन्द मनाने के लिए सबसे ज्यादा सुरक्षित जगह समझकर बनवाया था, लेकिन समय के फेर से अब यह भवन उजड़ गया है।

किले के महल की ऊपरी छत पर चढ़कर देखने से गोलकुण्डा नगर का सारा नजारा दिखाई पड़ता है। किले के भीतरी हिस्सों की भी सभी चीजें अच्छी तरह से दिखाई देती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



किले में कुतुबशाह ने एक सुन्दर मस्जिद भी बनवाई थी, जो कुतुबशाह की मस्जिद के नाम से पुकारी जाती है।

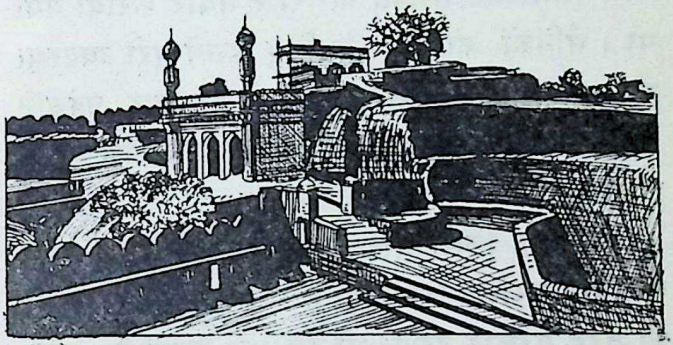

कुतुबशाह की मस्जिद

महल खास से नीचे उतरकर बहुत-सी इमारतें मिलती हैं। उनके पास एक बहुत बड़ा चौक है। इस चौक के एक तरफ कई महल बने हुए हैं। उनको बेगमों के महल के नाम से पुकारा जाता है। इनमें सजावट का बहुत-सा सामान था, जो कुतुबशाही की बरबादी के बाद नष्ट हो गया। लेकिन थोड़ा-बहुत टूटा-फूटा सामान अब भी पड़ा है।

इस किले की बनावट मुसलमान काल के भवन-निर्माण-कला का एक सुन्दर नमूना है। दक्षिण की कला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF



का इसपर पूरा प्रभाव पड़ा है। किले को सुलतान बादशाहों ने जहां अपने आनन्द का एक केन्द्र बनाया था, वहां उन्होंने इसमें सुरक्षा का भी पूरा प्रबन्ध किया था। किला बड़े मजबूत पत्थरों से तैयार कराया गया था। सैनिकों को रखने के लिए इसमें पूरी व्यवस्था थी। दरवाजे से ही सारे किले में समाचार पहुंचाने का प्रबन्ध था। बारादरियों की बनावट दक्षिण भारत की इमारतों से मिलती-जुलती है।

अब यह किला भारत सरकार ने पुरातत्व विभाग के अधीन सुरक्षित कर दिया है। अन्य पुरानी इमारतों की तरह सरकार इसकी भी देखभाल करती है। इसके कुछ भाग घूमने-फिरनेवालों के देखने के लिए साफ भी रक्खे जाते हैं।

इस किले की अब ऐसी हालत है कि घूमने-फिरने-वालों को भी इसके देखने में अधिक आनन्द नहीं आता। किले के उजाड़ हो जाने से टूटी-फूटी इमारतों में घुसना भी बुरा-सा लगता है। पर देखनेवाले देखते हैं कि इस किले के खण्डहरों में कितना लम्बा और मूल्यवान इतिहास छिपा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

## समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरदराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. धानवान के रत्न
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्या
८८. देश यों आगे ब
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा बबावील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे...
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक का ३ [illegible] ४०नये



९२

हि
८

४७ सैंतीस नये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu